PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE-29 VOLUME-3 IMPACT FACTOR- IIJIF-7.312

ISSN-2454-6283 July-September,2022

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

शोध-ऋतु

3

डा. सुनील जाधव

पत्राचार हेतु कार्यालयीन पता -
डॉ.सुनील जाधव,
महाराणा प्रताप हाउसिंग सोसाइटी,
हनुमान गढ़ कमान के सामने,
नांदेड-४३१६०५, महाराष्ट्र

web:- www.shodhritu.com
Email - shodhrityu78@yahoo.com
WhatsApp 9405384672

अनुक्रमणिका

1.ब्रज लोकगीतों में नारी चेतना का स्वर 6
–*सायमा अकरब साबिर खान* 6
2.रोज की कहानियों में आदिवासी विमर्श 8
–*संगिता खुशालराव रंधवे* 8
3.आधुनिक युग में पुस्तकालयों के विकास में डिजिटल माध्यम का योगदान 9
–*एकता कुमारी* 9
4.हम तो कवि हैं, इतिहास बदलनेवाले हैं 11
–*सुभाषचन्द्र गुप्त* 11
5.वर्तमान परिदृश्य में शिक्षा में जनसंचार माध्यमों की भूमिका 19
–*[1]डॉ.शिल्पी गुप्ता [2]डॉ.मनीषा माटोलिया* 19
6.डॉ.शशिप्रभा शास्त्री के कहानियों मे चित्रित सामाजिक मूल्यों का बदलता परिवेश 22
–*दयाशंकर यादव* 22
7.सुशीला टाक भौर लिखित 'संघर्ष' कहानी में दलित विमर्श 25
–*प्रीती यादव* 25
8.श्याम सुंदर दुबे से अलखनंदन पर समीक्षात्मक साक्षात्कार 26
–*चन्द्र पाल* 26
9.सामाजिक मानव जीवन में हिन्दू धर्म के परिदृश्य 28
–*डॉ.दयाराम नर्गेश* 28
10..इक्कीसवीं सदी की हिंदी कविता में राजनीतिक व्यंग्य 29
–*रेश्मा एम.एल.* 29
11.वैदिक साहित्य में दर्शन व संस्कृति : अवलोकन 32
–*डॉ0नवल किशोर* 32
12.बुन्देलखण्डी लोक संस्कृति और वृन्दावन लाल वर्मा 34
–*डॉ.यतेन्द्र सिंह कुशवाहा* 34
13.बालक के मानसिक स्वास्थ्य को प्रभावित करने वाले कारक और उनका समाधान 38
–*डॉ0रवेन्द्र राजपूत,* 38
14.स्त्रीवादी लेखन की मूल संवेदनाएँ 40
–*डॉ.सन्नो देवी* 40
15.Essay writing with Brainstorming 42
-Premendra P. Bhawsar 42
15.Biological And Cultural Adaptations Of Hominins 44
-Dr. R.K Rajouria 44
16.समकालीन कविता में चित्रित जनजाग्रति 46
–*डॉ.पी.व्ही.महालिंगे* 46

Scanned with OKEN Scanner

4.हम तो कवि हैं, इतिहास बदलनेवाले हैं

–सुभाषचन्द्र गुप्त
हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज,साकची, जमशेदपुर, झारखण्ड

छायावादोत्तर हिन्दी की गीति काव्यधारा को जिन कवियों ने प्रखर वैचारिकता, स्वस्थ भावबोध और सामाजिक दायित्व से जोड़ा, उनमें एक नाम है–गोपाल सिंह 'नेपाली'। लगभग चार दशकों तक नेपाली का कवि जिस तरह सर्जनात्मक धरातल पर सक्रिय रहा, वह उसकी अदम्य जिजीविषा, जनपक्षधरता और नैसर्गिक सृजन–चेतना का परिचायक है। वे अपने दौर के उन थोड़े–से शब्दकर्मियों में एक थे, जो अपनी शर्तों पर रचनारत रहे तथा अपने समय के अंतर्विरोधों के बीच अपनी सर्जनात्मक गरिमा को बचाए रखा। उनके स्वाभिमानी व्यक्तित्व के पीछे जीवन के कठिन संघर्षों का ताप रहा। उनकी सबसे बड़ी ताकत थी वैचारिक दृढ़ता और उसके प्रति गहरा नैतिक आग्रह। इसीलिए समझौतावादी नकार उनकी नियति बन गयी। नेपाली का कवि किसी काव्यांदोलन का मुँहताज नहीं रहा, लेकिन अपने समय और समाज को लेकर उनके भीतर एक प्रखर वैचारिक आंदोलन मृत्युपर्यन्त चलता रहा। यही कारण रहा कि उन्होंने समाज और जीवन के घात–प्रतिघातों को अर्थवान और छविमान बनाकर परोसा है।

लेकिन विडम्बना यह रही है कि छायावादोत्तर कवियों के मूल्यांकन के क्रम में एक प्रायोजित अभियान के तहत आलोचकों के एक वर्ग ने कुछ कवियों को अनावश्यक रूप से महत्त्वपूर्ण बना दिया और व्यापक जनपक्षधरता के बावजूद कई कवियों को हाशिए पर ढकेल दिया। वैसे कवियों को 'राष्ट्रीय चेतना' का कवि घोषित किया गया जो वस्तुतः 'राजकीय चेतना' के कवि थे। आलोचकों की इसी गिरोहबंदी की ओर संकेत करते हुए नेपाली ने लिखा है–"ओ आलोचक! विषघोल नहीं/साहित्य समझ–सुन, बोल नहीं/रंगरूटों से कह–दे कोई/मंदिर में पीटे ढ़ोल नहीं/मत पूछो छलनेवालों से/मत पूछो जलनेवालों से/पूछो जनता से और सही/राहों पर चलनेवालों से/तू दलबंदी पर मरे/यहाँ लिखने में है तल्लीन कलम/पर छोड़े नहीं जमीन कलम।" इतने कठोर शब्दों का प्रयोग तथा खुली चुनौती नेपाली के अंतर्मन में सामाजिक और साहित्यिक अंतर्विरोधों के प्रति उठनेवाली गहरी वेदना तथा विद्रोह का परिचायक है। निश्चित रूप से ऐसी ही वेदना तथा विद्रोह की मनोदशा में कबीर ने लिखा होगा–"जाके संग दस–बीस हैं/ताका नाम महंथ।" अकारण नहीं है कि **मुक्तिबोध** ने उस दौर के कवियों का मूल्यांकन करते हुए लिखा है–"आधुनिक काल के कवियों ने वास्तव की उपेक्षा नहीं की, नेपाली की कविता इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है।"[1] नेपाली ने जब साहित्य–संसार में प्रवेश किया, वह छायावाद का उत्तरार्द्ध और प्रगतिवाद का उत्कर्ष–काल था और प्रयोगवाद के लिए पीठिका बनायी जा रही थी। नेपाली ने छायावाद और प्रगतिवाद का सारतत्त्व ग्रहण किया, परन्तु छायावादी कवि बनने से बाल–बाल बच गए। इसका मुख्य कारण था अपने जीवनबोध और काव्यबोध के प्रति नेपाली की वस्तुपरक दृष्टि। उमंग (1933), पंछी (1934), रागिनी (1935), पंचमी (1942), नवीन (1944), नीलिमा (1945), हिमालय ने पुकारा (1963) कवि नेपाली के विविध रचनात्मक पड़ाव हैं और ये तमाम कृतियाँ संकीर्ण मतवाद तथा मूल्यों के प्रदूषण से दूर आत्मीय संवाद कायम करती हैं।

दुनिया, कलाकार को कला–जीवन जीने कहाँ देती? 11 अगस्त 1911 को बेतिया (बिहार) में जन्में नेपाली का सम्पूर्ण जीवन नमक–तैल की अनिवार्यताओं से जूझता और समय एवं समाज के विरोधाभासों से टकराता सर्जनात्मक निरंतरता तथा गतिशीलता का दहकता दस्तावेज है। जीवन की तात्कालिकता के गहरे दबावों ने उन्हें बार–बार मरोड़ा, पर जीने की मानवीय शर्तें उनकी रचनात्मक दिशा तय करती रहीं–"रहता हूँ मैं इस धरती पर/लेकिन न पशु, न परिन्दा हूँ/मानव बनने की कोशिश में/अपनी मेहनत पर जिन्दा हूँ।" नेपाली की कविताओं से गुजरते हुए यह अहसास बार–बार होता है कि जैसे हम रणक्षेत्र में युद्धरत किसी योद्धा को देख रहे हैं। वैसे आजादी के बाद हिन्दी–कविता में नकली कवि–योद्धाओं की एक जमात विकसित हुई है जो प्रायोजित प्रसिद्धि और समृद्धि के आरामगाह में बैठकर कविता गढ़ते रहे हैं। कविता गढ़नेवाले इन कवियों के हाथों में तलवारें तो थीं, लेकिन उनकी तलवारों पर धार ही नहीं थी। हो भी नहीं सकती थी क्योंकि संघर्ष की तलवारें तो विचारों की धार से चमकती हैं। जीवन और रचना के फासले को ज्यादा देर तक छुपाकर रखना संभव नहीं होता। नेपाली गढ़नेवाले नहीं, रचनेवाले कवि थे। उन्हें पाठकों तथा श्रोताओं का जितना स्नेह मिला, एक–दो को छोड़कर कदाचित् किसी को मिला हो और यही स्नेह नेपाली को जीने की ऊर्जा देता रहा। यह सर्वविदित है कि घोषणामात्र से ही नेपाली की रचनाओं को सुनने के लिए कवि–सम्मेलनों में श्रोताओं का सैलाब उमड़ पड़ता था और जनता रात–रातभर बिना पलकें झपकाये उनकी कविताओं में अवगाहन करती रहती थी। कविता और जनता का यह संयोग हिन्दी की जनपक्षीय कविता की गौरवशाली विरासत है।

Scanned with OKEN Scanner